खरमास : एक सिंहावलोकन

डॉ. रामाधार शर्मा*

"शास्त्रों के अनुसार सूर्य आत्मा का कारक ग्रह है और गुरु परमात्मा का स्वरूप है। सूर्य के गुरु की राशि में आने पर अथवा गुरु के सूर्य की राशि में आने पर आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है। ऐसी उत्कृष्ट दशा में यदि हम लौकिक कर्म (ईश्वराराधन आदि छोड़कर) करते हैं, तो मूल विन्दु से हटकर हमलोग लौकिक कर्म में फँस जाते हैं और अन्तम परिणति की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं।"

भारत एक धर्मप्राण सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, एवं व्रत पर्व तथा उत्सवों का देश है। यहाँ वर्ष भर पर्व, उत्सव एवं विभिन्न कार्यक्रम मौसम तथा समयानुरूप निर्धारित होकर चैत्रादि मासों में आयोजित होते रहते हैं जिससे मानव जीवन एवं समाज में निरंतरता और उत्साह बना रहता है। यहाँ की संस्कृति अतीत को स्मरण में रखते हुए वर्तमान में जीवन यापन कर भविष्य को संरक्षित करने की क्षमता रखती है। इसी क्रम में एक शब्द आता है खरमास। खरमास शब्द 'खर' और 'मास' की संधि से बना है। खर का अर्थ होता है रुक्ष, कठोर, खुरदरा आदि और मास का अर्थ होता है महीना। अतः खरमास का सामान्य अर्थ हुआ ऐसा महीना जो रुक्ष हो, खुरदरा हो।

ज्योतिष की दृष्टि में सूर्य के बृहस्पति की राशि (धनु और मीन) में प्रवेश के कारण वर्ष में दो खरमास होते हैं। सूर्य गोचरवशात् जब धनु राशि में प्रवेश करता है तो इसे धन्वर्क या धनुर्मास और जब मीन राशि में प्रवेश करता है तो इसे मीनार्क या मीन मास कहा जाता है। अर्थात् प्रति वर्ष सौर पौष तथा सौर चैत्र मास को खरमास कहते हैं। उत्तराखण्ड में इसे 'मलमास' या 'काला महीना' भी कहा जाता है। हिन्दू धर्म ग्रन्थ में इन पूरे महीनों में कोई भी शुभ कार्य निषिद्ध माना गया है। यह निषेध मुख्य रूप से उत्तर भारत में लागू होता है जबकि दक्षिण भारत में इस नियम का पालन कम किया जाता है। यहाँ तक कि यदि रवि भी सूर्य की राशि (सिंह) में संक्रमण करे तो इसे सिंहस्थ गुरु कहा गया है जिसमें मांगलिक कार्य निषिद्ध माना गया है। इसका आशय ज्योतिषतत्त्वविवेक नामक ग्रन्थ से स्पष्ट है:-

रविक्षेत्रगते जीवे जीवक्षेत्रगते रवौ।
गुर्वादित्यः स विज्ञेयः गर्हितः सर्वकर्मसु॥
वर्जयेत्सर्वकार्याणि व्रतस्वस्त्यनादिकम्॥

अर्थात् सूर्य की राशि में गुरु हो तथा गुरु की राशि में सूर्य संक्रमण कर रहा हो तो उस काल को 'गुर्वादित्य' नाम से जाना जाता है, जो समस्त शुभ कार्यों के लिए वर्जित माना गया है।

प्रश्न यह उठता है कि खरमास में कौन-कौन से कार्य निषिद्ध माने गये हैं और क्यों? महान दैवज्ञ "हरिशंकर सूरी", अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "मुहूर्तगणपति" में विवाह के विहित और त्याज्य मासों की व्याख्या के सन्दर्भ में कहे हैं-

मार्गशीर्षे धनुष्यर्के मीनार्कः फाल्गुनेऽशुभः।
सौरो व्रतविवाहादौ मासः सर्वत्र शस्यते॥

*रामपुर, नौबतपुर, पटना। अवकाशप्राप्त अभियंता, सदस्य, ऐस्ट्रोनॉमिकल सोसायटी ऑफ इण्डिया, भारत सरकार

अर्थात् चान्द्र मासानुसार मार्गशीर्ष और फाल्गुन में विवाह अशुभ होता है और सौर मासानुसार धनु और मीन राशि में सूर्य के रहने पर विवाह अशुभ होता है। श्रीराम दैवज्ञ कृत मुहूर्तचिंतामणि की पीयूषधारा टीका में विवाह के लिए विहित मास की व्याख्या करते समय ऋषि कश्यप का सन्दर्भ देते हुए ज्योतिर्विद् गोविन्द कहते हैं-

उत्तरायणगे सूर्ये मीनं चैत्रं च वर्जयेत्।

अर्थात्- उत्तरायण में भी सूर्य के मीन राशि वाले महीने और चैत्र मास विवाह के लिए वर्जित करना चाहिए। यहीं पर आगे कहते हैं -

मीने धनुषि सिंहे च स्थिते सप्त तुरङ्गगमे।
क्षौरमन्नं न कुर्वीत विवाहं गृहकर्म च॥"

अर्थात् मीन, धनु और सिंह राशि में सूर्य के रहने पर मुंडन, अन्नप्राशन, विवाह और गृहनिर्माण सम्बन्ध कार्य नहीं करना चाहिए। वराहमिहिर के अनुसार:

"उद्यानचूडाव्रतबन्धदीक्षाविवाहयात्रादि वधूप्रवेशः तडागकूपत्रिदशप्रतिष्ठा बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात्॥"

अर्थात्, सिंह की राशि में जब बृहस्पति हो, तो मुंडन, व्रतबंध, दीक्षा, विवाह, विशेष यात्रा, देवादि प्रतिष्ठा, ये सब शुभ कृत्य न करें। यह भी कहा गया है –

सिंहस्थिते गुरौ राजन् विवाहं नैव कारयेत्।
मकरस्थे न कर्तव्यं यदिच्छेदात्मनः शुभम।
व्रतबन्धं प्रतिष्ठाम् विवाहम् मन्दिरप्रवेशम्।
यात्रां च याम्यदेशे तु कुर्यादार्यो न सिंहांशे॥"

सामान्यतः करणीय और अकरणीय कर्मों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है। खरमास में प्रायः सभी काम्यकर्म (जैसे- कुएँ, बावली, तालाब, (बोरिंग) खोदना और उनकी प्रतिष्ठा करना, बाग आदि का आरम्भ और प्रतिष्ठा, किसी भी प्रयोजन के व्रतों का आरम्भ और उद्यापन, जन्म के 6 महीने बाद होने वाले सभी संस्कार जैसे कर्णवेध, मुण्डन, यज्ञोपवीत, समावर्तन, विवाह, वधुप्रवेश, द्विरागमन, तुला आदि के 16 महादान, सोमादि यज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वेदारम्भ, नियत कल में बालकों के न किए हुए संस्कार, देवप्रतिष्ठा, प्रथम बार की तीर्थयात्रा एवं देव दर्शन, संन्यास-ग्रहण, अग्निपरिग्रह, राज्याभिषेक, प्रथम बार राजा का दर्शन, अभिषेक, प्रथम यात्रा, चातुर्मासीय व्रतों का प्रथमारम्भ आदि) वर्जित हैं।

क्या करना शुभ होता है?

परंतु अलभ्य योगों के प्रयोग; अनावृष्टि के अवसर पर वर्षा हेतु विहित पुरश्चरण, ग्रहणकालिक स्नान, दान, श्राद्ध, और जपादि, पुत्र जन्म के कृत्य और पितृमरण के श्राद्धादि तथा गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण और अन्नप्राशन संस्कार, नया वस्त्र खरीदना एवं धारण करना, आभूषण-क्रय (परन्तु धारण नहीं), फ्लैट, मकान, नया वाहन और नित्य उपयोग की वस्तुओं को खरीदना और प्रथम बार उपयोग करना भी शुभ होता है। इस महीने में निष्काम भाव से ईश्वर के उद्देश्य से जो व्रत आदि किये जाते हैं उनका अक्षय फल होता है और व्रती के सम्पूर्ण अनिष्ट नष्ट हो जाते हैं। अतः इस महीने के कृत्य का अक्षय फल होता है।

खरमास में कुछ कर्मों को वर्जित क्यों किया गया?

फलित ज्योतिष के दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या कुछ लोग इस प्रकार करते हैं- धनु और मीन गुरु की राशियाँ हैं। जब सूर्य इन राशियों में प्रवेश करता है तब मित्र का गृह होने से उसका मनोबल बढ़ जाता है। सूर्य क्रूर ग्रह है इसलिए बढे मनोबल में वह सामान्य रूप में अनिष्ट करता है। संभावित अनिष्टों से बचने के लिए हम बहुत से मंगल कार्य रोक देते हैं।

एक व्याख्या यह भी है कि जब भी सूर्य, बृहस्पति के साथ गोचर करते हैं तो इससे बृहस्पति का तेज धूमिल हो जाता है। यह स्थिति मलमास कहलाती है। देव गुरु बृहस्पति विवाह के कारक माने गए हैं, उनके अस्त होने से नव-दंपतियों को उनका आशीर्वाद नहीं मिल पाता। इसलिए इस अवधि में विवाह प्रतिबंधित रहते हैं।

वैज्ञानिक कारण

अब वैज्ञानिक कारण की ओर दृष्टिपात करते हैं। हम जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्ष पर लगभग 23.45° झुकी हुई है। यह सूर्य के चारों ओर दीर्घवृत्ताकार पथ पर 365 दिन, 5 घण्टे, 48 मिनट व 45.51 सेकेण्ड में एक चक्कर पूरा करती है, जिसे उसकी परिक्रमण गति कहते हैं। पृथ्वी पर ऋतु परिवर्तन, इसकी कक्षा पर झुके होने के कारण तथा सूर्य के सापेक्ष इसकी स्थिति में परिवर्तन यानी वार्षिक गति के कारण होती है। वार्षिक गति के कारण ही पृथ्वी पर दिन–रात छोटा–बड़ा होता है। इसी झुकाव के कारण 6 महीने पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव सूर्य के सम्मुख झुका हुआ होता है और 6 महीने पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव।

धीरे-धीरे (निरयण सूर्य के मेष राशि से मिथुन राशि तक अर्थात् लगभग 13 अप्रैल से 15 जुलाई तक) पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव का झुकाव सूर्य की तरफ होने लगता है (अर्थात् सूर्य की दूरी धीरे-धीरे घटने लगती है)। इस दौरान यहाँ गर्मी बढ़ने लगती है और धीरे धीरे गर्मी प्रचंड होने लगती है। पश्चात् (कर्क राशि से कन्या राशि अर्थात् लगभग 16 जुलाई से 16 अक्टूबर तक) पृथ्वी का उत्तरी ध्रुव वापस लौटता हुआ सूर्य से दूर जाने लगता है और हमारे यहाँ गर्मी की प्रचंडता कम होते हुए ख़त्म होने लगती है। पुनः सूर्य जब तुला राशि से धनु राशि (लगभग 17 अक्टूबर से 13 जनवरी) तक की यात्रा तय करता है तो पृथ्वी का दक्षिणी ध्रुव सूर्य के सम्मुख होने लगता है। इस दौरान उत्तरी ध्रुव के सूर्य से दूर होने के कारण हमारे यहाँ ठंड पडनी शुरू होती है और जैसे-जैसे उत्तरी ध्रुव दूर जाता है ठंड बढ़ती जाती है। फिर जब सूर्य मकर, कुम्भ और मीन राशियों में (लगभग 14 जनवरी से 12 अप्रैल) रहता है तो धीरे धीरे ठंड कम होने लगती है।

यह अनुभूत है कि मकर संक्रांति के बाद ठंड कम होने लग जाती है। मकर संक्रांति से ही दक्षिणी ध्रुव सूर्य से दूर खिसकने लगता है और उत्तरी ध्रुव सूर्य की ओर बढ़ने लगता है। उत्तरी ध्रुव का यह खिसकाव सूर्य के मिथुन राशि पर्यन्त चलता है। धनु राशि में रहने के दौरान सूर्य हमारे देशांतर रेखा से सबसे ज्यादा दूरी पर स्थित रहता है; इसलिए इस दौरान ठंड अपने चरम पर होती है। इसलिए इस मास को पर्वोत्सवादि के लिए त्याज्य माना जाता है, इसे धन्वर्क दोष या खरमास कहते हैं। पुनः मीन राशि के दौरान पतझड़ होने लगते हैं और प्रकृति नीरस हो जाती है। इन सब कारणों से इस माह को वर्जित माना जाता है इसे मीनार्क दोष या खरमास कहा जाता है। ये तो है खरमास का सैद्धांतिक पक्ष।

उपर्युक्त व्याख्या 1. और 2. पूरी तरह से समञ्जित इसलिए नहीं हो पाती; क्योंकि निष्काम भाव से ईश्वराराधन और तत्सम्बन्धी व्रतपर्वोत्सव का फल खरमास में अक्षय बताया गया है। ध्यातव्य यह है कि ज्योतिष की दृष्टि में सूर्य और बृहस्पति आपस में मित्र हैं। फिर, यह कैसा कि सूर्य और बृहस्पति के एक साथ होने पर मांगलिक कर्म वर्जित किया जाये। वस्तुतः प्रत्येक जीव की अन्तिम अभिलाषा है ब्रह्म की प्राप्ति। सारे व्रतोपवासादि तथा धर्मकर्म की परिणति ईश्वर प्राप्ति के लिए ही तो है।

बृहस्पति एवं सूर्य की युति का रहस्य

अब बृहस्पति की राशि में सूर्य का प्रवेश अथवा सूर्य की राशि में बृहस्पति का प्रवेश का रहस्य देखें। वेद वाक्य है- **"सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"** (ऋग्वेद 1.115.1, यजुर्वेद 7.42 और अथर्ववेद 13.2.35), अर्थात् समस्त चराचर जगत् की **आत्मा सूर्य** ही है। बृहस्पति की किरणें अध्यात्म नीति व अनुशासन की ओर प्रेरित करती हैं। शास्त्रों के अनुसार सूर्य आत्मा का कारक ग्रह है और गुरु परमात्मा का स्वरूप है। सूर्य के गुरु की राशि में आने पर अथवा गुरु के सूर्य की राशि में आने पर आत्मा से परमात्मा का मिलन होता है। ऐसी उत्कृष्ट दशा में यदि हम लौकिक (ईश्वराराधन आदि छोड़कर) कर्म करते हैं तो मूल विन्दु से हटकर हमलोग लौकिक कर्म में फँस जाते हैं और अन्तम परिणति की प्राप्ति नहीं कर पाते हैं। इसलिए कहा गया है कि खरमास के दौरान जितना संभव हो भगवान् की भक्ति और उपासना करनी चाहिए। इस अवधि में भगवान् में ध्यान केन्द्रित करना आसान होता है इसलिए भक्ति का फल शीघ्र प्राप्त होता है।

अतः खरमास गर्हित मास नहीं, वरन् वरेण्य मास है।

***

अग्रिम अंक रामानन्दाचार्य विशेषांक के लिए प्रस्ताव

रामा भगति रामानन्द जाने। पूरन परमानन्द बखाने।

आदि-ग्रन्थ में संकलित सेन नाई के पद में आचार्य रामानन्द को रामभक्ति परम्परा में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 14वीं शती के रामानन्दाचार्य ने सम्पूर्ण भारत में द्विभुज राम की उपासना का पर्याप्त प्रचार-प्रसार किया, जो बाद में चलकर एक सम्प्रदाय के रूप में परिवर्तित हो गया। रामानन्दाचार्य के प्रधान 12 शिष्यों- कबीर, रविदास, सेना नाई,, आदि ने एख पूरी परम्परा बनायी, जिसके द्वारा समाज में जातिगत भेद-भाव से उठकर भक्ति की प्रधानता के आधार पर एकरस समाज के निर्माण को बल मिला। रामानन्दाचार्य के शिष्यों ने अनेक स्थानों पर अपने अपने मठों का निर्माण किया तथा वहाँ से समाज को एकसूत्र में बाँधने का काम किया। ऐसे रामानन्दाचार्य एवं उनकी परम्परा पर आज अनेक बिन्दुओं पर शोध आवश्यक प्रतीत हो रहे हैं, जिनमें से कुछ यहाँ प्रस्तावित हैं-

- बिहार में भी वर्तमान में ऐसे अनेक रामानन्दी मठ हैं, जिनकी परम्परा पर कोई काम नहीं हुआ है। किसी एक मठ की भी परम्परा पर आलेख लिखे जाते हैं तो अग्रतर शोध के लिए वे मार्गदर्शक बनेंगे।
- रामानन्दाचार्य के नाम पर आज अनके ग्रन्थों के आनन्द-भाष्य मिलते हैं। गीता, ब्रह्मसूत्र एवं उपनिषद्-ग्रन्थों पर आनन्द-भाष्यों का प्रकाशन हुआ है, जो archive.org वेबसाइट पर पूर्णरूप से उपलब्ध हैं। इनमें सामाजिक समरसता के जा सूत्र हैं, उनपर आलेख प्रस्तावित हैं।
- पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ने रामानन्दाचार्य की हिन्दी रचनाओं का संकलन-सम्पादन पाण्डुलिपि से किया है जो "रामानन्द की हिन्दी रचनाएँ" के नाम से नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी से प्रकाशित हैं। इसमें रामानन्द के प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धान्त पर भी आलेख आमन्त्रित हैं।
- रामानन्दाचार्य की रचना वैष्णवमताब्ज-भास्कर प्रामाणिक मानी जाती है। इसमें प्रतिपादित सिद्धान्त हमें भारद्वाज संहिता के अन्तर्गत नारद-संहिता, सात्वत संहिता आदि अनेक प्राचीन संहिता-ग्रन्थों में भी मिलते हैं। उन संहिताओं का विवेचन भी अपेक्षित है, ताकि हम रामानन्दाचार्य के उदारवादी सिद्धान्तों का उत्स जान सकें।
- हम मौलिक शोध-आलेखों की अपेक्षा करते हैं, जिन विषयों पर अभी तक कार्य नहीं हुए हैं, वे सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

***